

चन्दि का पातु युमा ॥ वधाषत्वा गको नौ कपिल मुरजता मन्दला पद्यये  
 जन्वा दैत्यो तमागे प्रज मुरसि सि रं त्ये व रं ता न्धा पत्रे ॥ २ ॥ पु रं र के  
 सुरा नां यु म महि ष हि ष म हा शृंग मा दा य पा लो ॥ पा आ दो व द्य मा ना प्र न  
 व मु दि त या भै र व का ल रा त्री ॥ ४ ॥ पुं रं च र्वे ती म ति ष न्द प्र क त क त  
 क तां श र्व श द्या त मु ग्रा ॥ कु र्वा ना प्रे त म ध्ये श क ह क ह क हा हा त्य मु  
 श्रं क शं गी ॥ ५ ॥ पुं न रं नित्यं नित्ये प्र श न्ना द म ह दि मि दि मा दि दि मा स्म  
 रं यं ती ॥ पा आ नं च न्दि के तं रु म रु म रु म मा रु प मा ला भ्र मं नी ॥ ६ ॥ तं  
 तं नं त धा त्री प्र ग त श न् श तां दो र द्य न्धा व हं ती ॥ स्फै स्फै स्फै स्फै स्त का स  
 त क न कि त ह रा द न्त शं ध्या न ध्र वि मां ॥ ७ ॥ लो लं र द्या ग मा लां ल ल  
 ह ल ल ल ह ल लो ल लो ला ग्र वा चं ॥ च र्वे ती च न्द मु न्दं म ति म ति चि रं च



वयंती पुनानु॥ ८॥ वामे करो मृगाकं प्रलं सपरि नतां दधिने सुर्जवि  
न्द॥ कंथे नष्पत्र हारं वरध वि कजतां जुत के के नु मा ला॥ ९॥ स्कं  
धे कृत्वा रगिन्दध जनि क रयुतं वृंह कं का ल भा हं तै ला भ्य क्री त्रि  
वे नी त्रि पु म य विल स त्क निर्वा नान क र्मा॥ १०॥ लो हे नै के न क्क  
त्वा॥ चरु न नि ग द ते ना त्म न्पा तु सो मां॥ दि ग्वा सां रा श भे त्प्र म  
ति ज ग दि दं ज्मा ज वा क र्म पु रा॥ ११॥ वर्धं पु धं प्र वि त्रै ध र वि त प्र भु  
जा त्व त्म शाने प्र। ग्ना॥ दृक्ता भु तै प्र भु तै प्र थु ज घ न घ नां वर्ध नां गे  
कां ची॥ १२॥ सु ला त्प व्य ग्र ह्ता म र्द्धि र म दा ता म न्य त्रा वि शा  
ला॥ ईं द न्ता रे दि शु ष्प त्मी त व वि स तु ज ग दे वि स र्व ष्य मा धा त्॥



॥१३॥ समशारूपान्नकारे नररुधिरमदातांमृन्मंत्रांशप्रवेधुव्रधं  
वे॥ कालिकापालिनि त्वं शवशयनरतायोगिनीयोगमुद्रा॥ र  
कारिजवीकुमारीमरुनमयहृत्तं सिवाचन्दयशा॥१४॥  
इतिपथतिश्रीनोतीम्यतिशतमभिरषितंकल्मषेसर्वदास्य  
त्॥ इतिश्रीतत्रकैमुद्राकालिकास्तकंस्तोत्रंशर्पुणंशमापत्तं॥



श्रीगनेसाय नमः ॥ ॐ नमः सिवाय ॥ ॥ वृं ह्रं मुरालि सुधा चिं  
तलीं गं ॥ नीर्मल सोमीत वीन्दितलीं गं ॥ जन्म निदुषा विनास  
रालीं गं ॥ तं प्रनमामि सदा सिवलीं गं ॥ १ ॥

सिधिसुरासुरा वीन्दितलीं गं सुखसुगंधविलेपितलीं गं ॥  
पंकजयेन सदा चितलीं गं ॥ तं प्रनमामि सदा सिवलीं गं ॥ २ ॥

श्रीगुरुसुकुसुपुजीतलीं गं भावसदा परमात्मनिलीं गं ॥  
जरामर्न विनासनलीं गं तं प्रनमामि सदा सिवलीं गं ॥ ३ ॥

चन्दनकुम्कुमलेपीतलीं गं ॥ संचितपापविनासन



त

लीं गीं सँकर भक्ति सदा सिवलीं गीं ॥ तँ प्रनमामी सदा सिवलीं गीं ॥ ४ ॥  
यक्ष सुरा सुर वंदितलीं गीं कीं नर सत्परिवे स्थितलीं गीं मुनि वर से  
वित सँत तलीं गीं ॥ प्रनमानि सदा सिवलीं गीं ॥ ५ ॥ देव ग नार्चित पा  
वनलीं गीं रा वन दर्प विना सरालीं गीं ॥ काम विना सन कारनलीं  
गीं तँ प्रमामी सदा सिवलीं गीं ॥ ६ ॥ जनपती वे स्थित सो भीत  
लीं गीं दिन कर कोती सदा प्रवलीं गीं ॥ लीन मिदं जगती तव  
लीं गीं ॥ तँ प्रनमानि सदा सिवलीं गीं ॥ ७ ॥ अस्त दृष्टा परमा  
त्मनि लीं गीं दृष्टी समुत्भवं कारनलीं गीं ॥ कुत्सित पाप



विनासनलींगः नैप्रनसामीसदासिवलींगः ॥ ८ ॥ लींगात्मकीमि  
दं पुन्यपथेत्सीवसीनिधौ ॥ सर्वपापविनीर्मुक्तिं । पतिवेनस  
मुपते ॥ ९ ॥ इतीश्रीभृगुहिषीवीरचित्तलींगात्मकीलोत्तमं  
पुनस्तमाप्तं ॥ १० ॥



१० विगनेश्वराय विराये विश्वरूपाय ते नमः सर्वविघ्नहरं देवं  
सर्वस्वीतीं नमामीह ॥ श्रीगनेसाय नमः ॐ नमः श्रीभी  
मभैरवाय नमः ॥ भीमरूपं महाक्रोधं रक्तवर्णं सुतेज  
सं वायुपुत्रं महावीरं नमामीभीमभैरवं पार्वत्यो उवा  
चः देवदेवं महादेवं सर्वसत्त्वसुखप्रदं ॥ आपत्पुष  
परिप्रान्तिपिप्यतानान्तर्नाविभो ॥ २ ॥ यच्चतुर्लुखसंप  
त्तीधनधान्यकरं सदा ॥ ३ ॥ वित्तैषतीराजकुलेशान्ती  
पुलिप्रदायकं वक्तुमर्हति तेष्वेन नममानंदकरं पदं



इश्वरोऽवाच ॥ इदं नुकवचं दिव्यं भैरवस्य महात्मन ॥ वक्षामी  
तत्त्वतस्तमेगुह्यागुह्यातरं सुभम् ॥ भीमं सीरसिविनीस्य  
ललाते भीमदर्शनं ॥ नेत्रयोभुतस्तौ च प्रेतं वाहन्कंपुल्लयो  
हर्न च सारंगीया नुर्गं भवो ॥ कर्णयोभतनाथं च प्रेतं वाहन्कंपु  
ल्लयो ॥ नात्मा पुत्रोऽस्य यो वै वत्सवांगे सर्वभुत्सर्न ॥ अनादीमु  
तमासे च कृतिर्हर्तंगले नीसेत् ॥ स्कंधयोर्देत्यसमर्नवाहोर  
तुलते जस्य ॥ पार्श्वे कपालिर्न नित्यहृदयमुद्रमालिर्नः सी



न वक्ष्यते नेत्येवोर्वोरक्तलोचनः॥ उधरेचमहादस्त्रं क्षत्रेसं  
पार्वयोस्तथा॥ क्षत्रपालं प्रस्थदत्ते क्षत्रेसं नामिदं सिके॥ पा  
पौघस्मर्तकत्वावतुर्कलीं गदेऽसिके॥ गुदेरक्षाकरं नीसे  
तथोर्वोरक्तलोचनः॥ जानुनोद्युर्ध्वरागर्भं नखयोरक्तपाद्  
नगुल्फयोपादुकासिर्धौ पादुपृष्ठे श्वरेश्वरः॥ आपादमस्त  
नैवैव आपदुधारकं नीसेत्॥ पुर्वेदमहं सितेवेन



ॐ नमः श्रीभीमभैरवाय नमः ॥ ॥ भीमरूपं महाक्रोधं रक्तवर्णं सु-  
तेजसं ॥ वायुपुत्रं महाविरट् नमामी भीमदर्शनं ॥ ॥ पार्वत्यो उवाच  
देवदेवं महादेवं सर्वसत्त्वसुषुप्तदं ॥ आपद्युषदरिद्रानां विवि-  
तानां नृणां विभु ॥ १ ॥ यच्च तं सुषसं पंती धनधान्यकरं सदा ॥  
विशेषतो राज्ञः प्रेक्षणीयं पुंस्त्रिप्रदायकं ॥ २ ॥ वक्रमहं सि-  
खेन नममानंदकरं पदं ॥ इक्षरो उवाच ॥ इदं तु कवचं दिव्यं  
भैरवस्य महात्मनः ॥ वध्यामीतत्त्वतस्तं मे गुह्या गुह्या नरेशु  
भार ॥ ॥ भीमं सीरसि वीर्यस्ये ललाते भीमदर्शनं ॥



नेत्रयोभुतहर्नचसारनेधानुर्गभुवो ॥ ॥ कर्नयोभुतनाथचप्रेतवा  
हनकपुलयो ॥ ॥ नासापुत्रोत्थयोचैवसर्वगैसर्वभुसन ॥ अना  
दीभुतामासेवकृतीहर्तंगलेन्यस्येत् ॥ स्फुटवयोदैत्यसमनं  
वाहोरतुलनेजसंपाश्वैकपालिनैन्यस्येद्रुदयमुद्रमालिनं ॥  
॥ सान्तवधस्थलेन्यस्यतथोर्वोरक्तलोचनं ॥ उधरेचमहाद्रु  
त्तंक्षत्रेसंपार्श्वयोऽथ ॥ क्षत्रपालपुत्र्यदेवेक्षत्रेसनामिदे  
सिके ॥ पाणौघस्मर्नकत्यांवतुर्कलीगदेसिके ॥ ॥ गुदेरक्षा



गुदेरक्षाकर्ण्यस्येतथोर्वोरक्तलोचनी॥ जानुनो गुर्युरारभ  
र्जं घयो रक्तपाशनी॥ ॥ गुरुफ्रयो पादुका सिद्धी पादुपृष्ठे सु  
रैस्पुरी॥ आपादमस्तकं चैव आपदुधारकं न्यत्पत् ॥ ॥  
पूर्वेदमरुहसंचदखिनेददधारिनी॥ खकुहलपश्चिमा  
यां घंराठवादिनमुत्तर्मा॥ ॥ आज्ञेयां मग्नीवर्णचनैरित्यां  
चदिर्गवर॥ वायव्या सर्वभुते समीप्ताया चालसिद्धिर्द॥ ३  
धौबे चरिनी न्यस्ये पाताले रुद्रपीनी॥ स्वेर्वक्वचविधी



कृत्वा यथावर्तरे नंतरं ॥ येर्वध्यावातुर्त्सुसजपेत्का  
मान्वा पुयात् ॥ साधकं सर्वलोकेषु सत्यं सत्यं न सत्यं ॥  
इती श्री उदा मरुतं चतुरासीती साहस्रे शतमप्युक्तं ॥ ४८ ॥



। श्रीगणेशाय नमः ॥ नारुवाच ॥ ॥ प्रणम्य सिरसा देवं गौरि  
पुत्रं विनायकं ॥ भक्त्या यस्य स मेरे नित्यं मायु कामार्थसिद्धये ॥ १  
॥ प्रथमं वक्रतुन्दं च हेमवर्नं दुतीयकं ॥ त्रितीयं कृष्णपींगाक्ष  
गजवक्रं चतुर्थकं ॥ २ ॥ लंबोदरं पंचमं च खस्तमं वीरुवेच ॥  
सप्तमं वीर्यराजं च धुम्रवर्नं तथास्तमं ॥ ३ ॥ नवमं भालचंद्र  
च दसमं तु विनाकं ॥ येकादसं गणपतीं द्वादसं तु गजानरं ॥ ४  
॥ द्वादसे तानि नामानीतु संध्यपथेन ह ॥ न च विद्वद्भयं न ॥



स्ये सर्वसिद्धि कर प्रभु ॥ ५ ॥ विद्यार्थी लभते वीर्या धनार्थी लभते ध-  
नं ॥ पुत्रार्थी लभते पुत्रा मोक्षार्थी लभते जी ॥ ६ ॥ जपे गानपनी स्तोत्रं  
सं दमी मासे फलै लभेत् ॥ सर्व न्न सरेण सिद्धी चल भते नात्र सं सय  
अस्मान् ब्राह्मणानां च लिखित्वा य समर्पयेत् ॥ तस्य वीर भवेत् सर्व  
ग ने सस्य प्रसादता ॥ ८ ॥ इती श्री नारद पुरा ने सकल ना सनी नाम गने  
सक वचं स पुरां समाप्ती ॥ २ ॥



२० श्रीगणेशाय नमः

श्रीकृष्णाय नमः ॥ भजे वजे क म द्विरे समस्त पाप धर्म ॥  
स्व भगवती तरे जने सदैव नन्द नन्दन ॥ सपीछु गुरु मस्तक  
सुनाद वेनु हस्तक ॥ म नै ग गला ग रामा मी हस्त रा  
ग ॥ नमो जग भ मोचन

श्रीकृष्णाय नमः ॥ भजे वजे क म द्विरे समस्त पाप धर्म  
द न ॥ स्व भगवती तरे जने सदैव नन्द नन्दन ॥ सपीछु ग  
द मस्तक सुनाद वेनु हस्तक ॥ म नै ग गला ग रामा मी



कृष्ण नागर् ॥ नमो जग र्भ मोचन वीला ल माल लोच  
न ॥ वी धु त गो प षो च न न मा नी प व लो च न ॥ कृ  
एवीन्द मुदर ह्मी ता व लो क मुदर ॥ महेन्द्र राग म दा ह न  
न मा नी कृष्ण राग ॥ क र्द सो लु नु कृ द ल मु चा ह ग द  
म र्द न ॥ व र्जो ग नै क व ह्म न न मा नी कृष्ण दु ह्म व ॥ य सो  
दया स दा म या स के प या द या नी ची ॥ मु नु ष ले ष मु षः



नकसहं रा मा मी कृष्ण तु हं ॥ नवी न गो य मा ग हं नवी  
न के ही सा ग हं ॥ नवी न मे घ सु च हं न जे व जे क स दी हं ॥  
स दे व पा द पे क जं द खा ती पा न से नी जं ॥ द खा ती न न्द वा  
जं स दे न ग त पा ल कं ॥ व म ह्म त गो प रा ग हं द र्ग व जे  
क मो ह नं ॥ प्र स न्न भा नु सो न नं न मा मी कु ज न दी र्ग ॥



व  
दुर्गातका तमोह न सदा सदा निवेगी नी ॥ दीने दीने वन  
वन नमामी नंदन नव ॥ गुना कर सुखा कर कपाक  
कपा नी नी ॥ सुरा सुरा सुदा य व नमामी गोपना  
ये व ॥ नमस्त दुष सो री सस्त लो व तो व न ॥ सनस्त  
दान मा र्ग नमामी हस्त दा व र्ग ॥ सनस्त गोपना



मई नी का मका मदाय ई ॥ दुर्गंत चाहू मरु ई नमा  
नीवे नुगाय ई ॥ मेवोह वाव ॥ ॥ ॥ ई. मपाधि कनु  
धाई ॥ य सोमनी को सोई. नमामी दुध चोई ॥  
वीधरधगोपी काम गोज कामदाय ई ॥ रामा  
मीदुध कामने प्रजीव दीपाव ई ॥ यदा तदाय



ठातथातयैव ह्र ह्र ह्र ह्र तव् थ ॥ मया लो दे व ग र य ना  
तपो ह्र पा नी धी य ता ॥ इ ती श्री श्री ह्र ह्र ह्र लो त्री ली  
पु न्न समा प त् ॥ ॐ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



धन इति कलि नौ रज तो व मयं व र ते त्रशि  
 स्य रिषी रन सुत कल त्रपै विद्यो ग म  
 अं म वे त य दि न म ग ल पा  
 क य ॥ म ॥ अ पि ग ल ॥ स  
 रि ले सु र वं व्या धि वै प ल्य ना सं धा ते वा ह ते वै म वे  
 व डि ती च ॥ गृ हे स व्या सं ग वी सं प्र ना ता नि ला शं य दा पि क ला  
 पि क ला मा क म ध्या ॥ पि ध ॥ श त्रो वि म र्द न क र ॥ अ ए मो क्ष क रि ॥ अ श प्र शा द प ल दा

अनदा



१॥ अथाशक्तः ॥ सत्त्वसूत्रं १०८६ ॥ वेगमासकृत्कपंड ॥ गुणादप्यमकिंशो ॥ पूर्वतर्जनक्ष  
० ॥ नेन्द्रयाश्च ॥ यथमकल्पं मूर्च्छं ॥ सामवासा ॥ मेषासिगतं सवितपि ॥ मी  
नयासिगतं चन्द्रमसि ॥ नृत्तस्मिदि नञ्जी नयं नृदवसंस्कापितविहायनिवासित  
श्रीवन्धवाचाय्यस्वाह्वकश्रीमञ्जीश्रीआर्यावलाकिर्नञ्चपहदायकस्य  
श्रीमूलप्रमुखनसगल्पपविवाजायदृष्टिदानराक्कनिमन्युयामिचतुर्थ  
दिनदानपतिश्रीमानिग्लमधिपतिश्रीश्रीऊयजिह्ववनवीजपूद्रविक्रम  
साहदेवस्य ॥ यऊमानहिसवाहाइजलग्नस्यदेवस्य ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



# श्री राधा श्री कृष्ण H-30

सुरत श्री महाबिहार

ननु श्री मूल १ श्रीधनपाक - २१  
 श्री सहस्रमित्री - २ श्रीधनपाक - २२  
 श्री कृतल ३ श्रीधनपाक - २३  
 श्री यलौरवा ४ श्रीधनपाक - २४  
 श्री आगम ५ श्रीधनपाक - २५  
 श्री कपनाय ६ श्रीवाजहरी - २६

श्री अमरिपूज ७  
 श्री सगर ८  
 श्री गवदह ९  
 श्री कदवान १०  
 श्री लमहा ११  
 श्री लवदह १२  
 श्री महाकाल १३  
 श्री पल्पमल १४  
 श्री धनचाक १५  
 श्री कोटि लोह १६  
 श्री गमकमगमक १७  
 श्री धनमाकर्षाटक १८  
 श्री पिवस मू १९  
 श्री पिवको २०

सम्बन्ध १०७३ साक  
 मकोदशी अमरुदशी  
 अमावास्या अमरुद  
 एतमेये सुदबले दाद  
 शी सुक इति पायमा  
 अनवनी सुक निमना  
 ओडका  
 सम्बन्ध १०७३ साक  
 मार्गवकु सुगयो  
 पलेह सुगुलादव  
 मागुग द्योपक  
 मसुभा धी ह्री  
 साभगहि सुक  
 मका को सुक  
 धे सुदको रध  
 सो पुन मनि  
 म खोवा सुक

सम्बन्ध १०७३ अंगु कृष्ण अष्टमी ॥  
 उरु गोखान दंग ॥ सिद्धि योग ॥ ब्रधवाज  
 देवदूत नम सिंह व ६ अदका सिलिखी -

श्री श्री कृष्ण सहस्रकीर्तन पूजा विष्णु मन्त्र १०७३  
 १०७३ को द्वागुल २० गते ६४ रंगे एको रिकवत वीज विष्णु मन्त्र १०७३

दशरु धान १ पाठि  
 चतुस ४ माना सिमा  
 पाणि १ पाथि भासु पुदर  
 १०७३